Dr. Dhananjay Kumar
Assistant professor
S.R.AP college
Course - BA I

बलबन और राजत्व सिद्धांत

• राजत्व सिद्धांत देने की जरूरत क्यों पड़ी

- इल्तुतमिश के मृत्यु के बाद सुल्तान की प्रतिष्ठा धीरे-धीरे न्यूनतम बिंदु पर पहुंच गई थी रजिया के शासनकाल को छोड़ दिया जाए तो कोई भी ऐसा सुल्तान नहीं हुआ जो सुल्तान की मर्यादा और सल्तनत की प्रतिष्ठा को फिर से बहाल कर सके। दल

- चालीसा के सदस्य सम्पूर्ण व्यवस्था पर हावी हो चुके थे। जरूरत इस बात की थी कि कोई ऐसा सुल्तान आए जो सुल्तान की प्रतिष्ठा मर्यादा और सल्तनत की प्रतिष्ठा को फिर से ला सके और कानून व्यवस्था की स्थिति को सुदृढ़ कर सके। बलबन गद्दी पर बैठते ही इन बातों को ध्यान में रखकर राजत्व सिद्धांत को प्रतिपादित

- बरनी लिखते हैं "शासन शक्ति का भय जो सभी सुशासन का आ० होती है लोगों के हृदय से निकल चुका था। समाज की स्थिति काफी खराब हो गई थी, ऐसे सुल्तान की जरूरत थी जो कानून के राज्य को एक Dictator king की तरह कायम कर सके

– मिनहाज सिराज के अनुसार उसके राज्याभिषेक पर बैठते ही समय समस्याएँ उसकी सिमट न आयी थी कि, बिना सुल्तान बल को खर्ची करे ही समस्या का समाधान नहीं हो सकता था।

– दल-चालीसा का पूर्ण विनाश :–

– बलबन स्वयं कभी दल-चालीसा का सदस्य रहा था वह जानता था कि तुर्क अमीर किस प्रकार अपनी शक्ति का दुरुपयोग करते हैं और सल्तनत की कमजोरी पर हावी होते जा रहे हैं। बड़ी सूझ बूझ से इन्होंने दल-चालीसा के सदस्यों का ठिकाना लगाना शुरू किया। दल-चालीसा को पूरी तरह से कमजोर कर समाप्त करने के लिए इन्होंने कई उपाय अपनाएँ :–

(i) निम्न जातीय तुर्क को दल चालीसा से भर दिया

(ii) स्थानांतरण की नीति को अपनाया।

(iii) सामान्य अपराध के शिकायत पर भी दल-चालीसा के सदस्यों को कठोर से कठोरतम दंड दिया, धीरे-धीरे बलबन ने दल-चालीसा के हैसियत को न्यूनतम बिन्दु पर

पहुँचा कर दल चालिसा का अंत कर दिया। दल चालिसा के अंत होने से सुल्तान की प्रतिष्ठा मे भारी बढ़ोतरी हुई।

- बलबन मध्यकाल का पहला सुल्तान है जिसने राजत्व सिद्धांत को स्पष्ट किया राजत्व विचार दिए। यानि शासन करने की नीति को स्पष्ट किए। बरनी द्वारा संकलित इनके देश्या (वसीयत) मे राजत्व सिद्धांत की पूरी व्याख्या मिलती है।

- इस सिद्धांत का निष्कर्ष यह है कि :-

(i) सुल्तान और रिआया (जनता) बराबर नहीं है।

(ii) सुल्तान और अमीर की बराबर नहीं है

(iii) सुल्तान और उलेमा की बराबर नहीं है।

(iv) सुल्तान और सुल्तान के परिवार के लोग बराबर नहीं है

(v) सुल्तान अपने सल्तनत मे सर्वोपरि है

(vi) सुल्तान को इस धरती पर ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाना चाहिए यानि सुल्तान नियाबते खुदाई है। (ईश्वर की प्रतिनिधि)

और विशेषाधिकार का संरक्षित कार्य कर पाता था राजा की शक्ति का स्रोत एक अमीर से प्राप्त नहीं होता उसके ईश्वर से था / सल्तनत सुल्तान को कार्य संपादित करने से बाधित नहीं होते / इस प्रकार बलबन ने ईश्वर का प्रेरित (दैवीय) का अपनी निरंकुश सत्ता की पुष्टि करना चाहता था / अतः इसलिए

- सुल्तान इस धरती पर ईश्वर का प्रतिबिम्ब है अथवा ज़िल्ले-इलाही है

- बलबन के राजत्व में न्यायिक व्यवस्था पर भी जोर दिया गया है, इसके लिए बलबन ने स्पष्ट किया कि यदि मामला रियाया और रियाया के बीच का हो तो बलबन तटस्थ है, हिंदू रियाया और मुस्लिम रियाया के बीच का मामला हो तो तब भी बलबन तटस्थ है

- रियाया और अमीर की, रियाया और बलबन के परिवार अमीर की और अमीर की का मामला हो तो भी बलबन तटस्थ है।

- यदि मामला रियाया, अमीर वर्ग, उलेमा वर्ग

और सुल्तान के बीच का हो तो यह मामला कुछ है ही नहीं अर्थात सुल्तान यहाँ धार्मिक मामला मे भी सर्वोच्च है

- धार्मिक मामलो मे अपनी संकीर्णता आदि कर बलबन ने सुल्तान पद की मर्यादा और सल्तनत की प्रतिष्ठता मे भरी वृद्धि कर दिया।

- अपने पुत्र बुगरा खाँ के समक्ष राजत्व की व्याख्या इन शब्दों मे किए है, " राजा का हृदय ईश्वर की कृति को प्रतिबिंब प्रतिनिधि करता है जिसके बल पर वह अति महत्वपूर्ण कार्यो को पूरा कर पाता है।

(ii) राजत्व निरंकुशता का सजीव प्रतीक है

(iii) कि राजा को अपनी सुरक्षा के लिए सावधान रहना चाहिए तथा जनता मे उसके प्रति भय होना चाहिए तभी शासन अच्छे से चल पाएगा। खलीफा से अनुमति लेकर ही शासन संचालित करना चाहिए।

इसी आधार के लिखे पर तात्कालिन